CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आलेख

Received 20.11.2022 Reviewed 02.12.2022 Accepted 18.12.2022

वैदिक शिक्षा कार्य प्रणाली की वर्तमान कालखंड में उपादेयता

*आलोक कुमार शर्मा
**डॉ. मनोजलता सिंह

मानव के विकास का आधार शिक्षा है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित है तथा इन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। मनुष्य के जन्मजात शक्तियों का विकास शिक्षा के द्वारा होता है। तदुपरान्त उसके ज्ञान कौशल में वृद्धि होती है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति सभ्य एवं सुसंस्कृत नागरिक बनता है। शिक्षा देश, प्रेम, बलिदान व निहित स्वार्थों के त्याग की भावना को प्रज्वलित करती है, जिससे व्यक्ति समाज का एक महत्वपूर्ण व उत्तरदायी सदस्य तथा राष्ट्र का एक सुयोग्य व सजक नागरिक बनता है।

वैदिक शिक्षा मात्र तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली प्रक्रिया नहीं थी। बल्कि यह एक वृहद चिंतन थी। यह भारतीय संस्कृति की मूल थी। यही कारण है कि युगान्तरों में दीर्घ परिवर्तनों के पश्चात् भी उसकी मौलिक छाप आधुनिक शिक्षा क्षेत्र में दृष्टिगोचर होती है।

आदर्शवादिता

प्राचीन भारतीय शिक्षा आदर्शवाद पर आधारित है। वह आदर्शवाद के व्यक्ति को सत्य, अहिंसा, त्याग एवं तपस्या का पाठ पढ़ाती है। क्योंकि आज के शिक्षक शिक्षार्थी या समूचे समाज व राष्ट्र के लिए आदर्शवाद से परिपूर्ण गुणों की आवश्यकता है। हम वैदिक कालीन शिक्षा की आधुनिक शिक्षा के मूल सिद्धांत के रूप में ग्रहण कर सकते हैं और चरित्र निर्माण तथा सादा भोजन एवं उच्च विचार को शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में स्थान दे सकते है।

अनुशासन एवं गुरू शिष्य संबंध

प्राचीन भारतीय शिक्षा में पायी जाने वाली छात्रों की अनुशासन की भावना तथा शिष्य का संबंध विश्व विख्यात रहा है। आज के शैक्षिक वातावरण में अनुशासनहीनता सर्वत्र देखने को मिलती है और शिक्षक छात्र संबंध विक्रेता–क्रेता संबंध बन रहे हैं। इन दोनों ही परिस्थितियों के फलस्वरूप सम्पूर्ण शैक्षिक वातावरण दूषित होता जा रहा है और शिक्षा छात्रों की शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक विकास में असमर्थ सिद्ध हो रही है। यद्यपि आज शिक्षक एवं छात्र वैदिक कालीन गुरू शिष्य पिता–तुल्य संबंध के आदर्श की ओर अग्रसर होकर बहुत अच्छे संबंध बना सकने में सफलता अवश्य प्राप्त कर सकते है।

व्यावहारिक एवं पूर्ण शिक्षा

वैदिककाल में शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित नहीं थी बल्कि व्यवहारिक भी थी, जो उसे पूर्ण जीवन के लिए तैयार करती थी। शारीरिक विकास, मानसिक विकास, आध्यात्मिक विकास, सांस्कृतिक विकास को महत्व दिया जाता था। विद्यार्थियों को केवल अलौकिक शिक्षा नहीं दी जाती थी बल्कि कला कौशलों और व्यवसायों की भी शिक्षा दी जाती थी। गुरूकुल की शिक्षा में केवल लौकिक–पारलौकिक शिक्षा का समावेश नहीं था, बल्कि एक पूर्ण मनुष्य के विकास की योजना थी।

अनुकरणीय विषय

प्राचीन वैदिक काल में जिन विषयों का ज्ञान दिया जाता था। यद्यपि उनका संबंध मोक्ष प्राप्ति से था। लेकिन व्यावहारिक विषय भी थे, जैसे– संस्कृत भाषा, साहित्य, धर्म, दर्शन, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद कला और संगीत इत्यादि। जहां तक चिकित्सा शास्त्र का प्रश्न है, आज विश्व में चिकित्सा पद्धति अपने उत्कर्ष शिखर पर पहुँच रही है, फिर भी कुछ रोगों का निदान संभव नहीं हो पा रहा है, लेकिन वैदिक काल में आयुर्वेद पद्धति सभी प्रकार के रोगों की निदान की क्षमता रखती थी।

शायद इसलिए आज विश्व के कई विकसित देश आयुर्वेद की ओर मुड़कर देख रहे है। वैदिक काल में शिक्षा केवल चिकित्सा क्षेत्र में ही अद्वितीय नहीं थी बल्कि इसमें ऐसा ज्ञान छिपा था, जिससे लोग अपने जीवन को सुखी बना सकते थे।

अतः निर्विवाद सत्य है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्राचीन कालीन शिक्षा की अन्तर्निहित नीतियों को ग्रहण किया जाये तो समाज में सदाचार, दया, मैत्री, अनुशासन, करूणा का शीर्ष वातावरण बनेगा जिससे शिक्षा के नव आयाम का नियोजन एवं स्वच्छ विद्यालयी वातावरण का अवसर बनेगा, शिक्षक एवं विद्यार्थियों में आदर्शवादी समन्वय स्थापित होगा। उत्तरदायित्वों का उचित अध्याय जुड़ेगा, आदर्श नागरिकों का शिक्षालयों में निर्माण होगा। राष्ट्र को सुयोग्य नागरिक अर्जित होंगे। वास्तव में वर्तमान परिवेश को प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की प्रयोजनीयता उपयोगिता एवं उपादेयता को दृष्टि में रखते हुए उन समग्र प्रक्रिया के माध्यम से अपने विद्यार्थियों को सृजित करना ही नव समाज का निरूपण एवं प्राचीन भारतीय शिक्षा की श्रेष्ठ प्रासंगिकता स्वीकार करनी होगी।

संदभ ग्रंथ साहित्य

1. अग्निहोत्री रविन्द्र (2007) :– आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्या एवं समाधान राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।

2. अल्तेकर (1975) :– एज्यूकेशन इन एसियण्ट इण्डिया मनोहर प्रकाशन, वाराणसी।

3. पाण्डेय रामशकल (2014) :– उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

4. शर्मा, रामनाथ व शर्मा, राजेन्द्र कुमार (2006) शैक्षिक समाजशास्त्र एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स।

5. शिवदत्त ज्ञानी (2003) भारतीय संस्कृति राजकमल प्रकाशन।

Corresponding Author
*** आलोक कुमार शर्मा**
****डॉ. सुश्री मनोजलता सिंह**
Department of Education
Maharaj Vinayak Global University, Jaipur, Rajasthan.
Email- alokkumars199@gmail.com, Mob-9785222062